नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

ज्ञान शांति मैत्री

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

व्यक्तिगत, सामाजिक आचरण भी है लोकतंत्र -प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र

हिंदी विवि में 'भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियां' पर व्याख्यान

वर्धा दि. 01 जुलाई 2015: भारतीय लोकतंत्र को कायम रखने के लिए हमें अपने व्यक्तिगत और सामाजिक आचरण के माध्यम से लोकतंत्र के समक्ष आने वाली चुनौतियों का मुकाबला करना चाहिए। लोकतंत्र में हर पिढी को अपनी आज़ादी की लडाई लडनी पडती है। उक्ताशय के विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 'भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियां' पर आयोजित विशेष व्याख्यान में प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने रखे।

विश्वविद्यालय के विकास एवं शांति अध्ययन विभाग द्वारा मंगलवार को हबीब तनवीर सभागार में प्रो. मनोज कुमार की अध्यक्षता में व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. चित्तरंजन मिश्र विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रदर्शनकारी कलाएं विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा तथा विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी मंचासीन थे।

प्रो. मिश्र ने आज़ादी के पहले और बाद की परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए कहा जिन नेताओं ने आज़ादी के सपने देखे थे और अपने समय के बदलाव के साक्षीदार थे उनके चले जाने के बाद उनके सपनों का हिसाब नहीं हो सका। यह एक विडंबना ही है कि लोकतंत्र को लहर, सहानुभूति और निषेधात्मकता का रोग लग गया है और यह मोटा-मोटी यह देखा है कि चुनाओं में सरकार बनाने का ही यत्न हुआ न कि नागरिक विवेक को जगाने का। उन्होंने कहा कि लोगों का अराजनीतिकरण होना ही लोकतंत्र के लिए खतरा बन रहा है।

महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी शांति अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार ने विभिन्न राजनीतिक दलों के भीतर का लोकतंत्र खत्म हो रहा है और वहीं लोग लोकतंत्र को चलाने लगे है और

सन 1991 के बाद से परिस्थिति बिगडती जा रही है। उन्होंने जयप्रकाश नारायण और सम्पूर्ण क्रांति और आपातकाल के दौर की राजनीति का संदर्भ भी अपने वक्तव्य में दिया।

प्रो. सुरेश शर्मा ने कहा कि लोकतांत्रिक अधिकारों को छीनने की कोशिश ही लोकतंत्र के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। उन्होंने आपातकाल लगाए जाने की पृष्ठभूमि से जुड़े संस्मरण को याद करते हुए तब के घटनाक्रम पर विस्तार से बात रखी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने किया तथा आभार सहायक प्रोफेसर डॉ. चित्रा माली ने माना। कार्यक्रम के समापन पर साहित्यकार कमलेश के निधन पर दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के अध्यापक एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।